नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

होर्मुज पर टकराव से दुनिया फिर संकट में

पश्चिम एशिया एक बार फिर ऐसे मोड़ पर खड़ा है, जहां क्षेत्रीय संघर्ष का असर पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था पर पड़ सकता है. होर्मुज जलडमरूमध्य के ताजा टकराव ने वैश्विक ऊर्जा सुरक्षा, समुद्री व्यापार और अंतरराष्ट्रीय कूटनीति को गंभीर चुनौती के सामने ला खड़ा किया है. दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों में शामिल यह संकरा जलमार्ग लंबे समय से रणनीतिक प्रतिस्पर्धा का केंद्र रहा है. यदि यहां लंबे समय तक अस्थिरता बनी रहती है, तो इसका प्रभाव केवल खाड़ी क्षेत्र तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि एशिया, यूरोप और अमेरिका की अर्थव्यवस्थाओं तक महसूस किया जाएगा.

होर्मुज जलडमरूमध्य का महत्व इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि वैश्विक स्तर पर समुद्री मार्ग से होने वाले कच्चे तेल और तरलीकृत प्राकृतिक गैस के बड़े हिस्से का परिवहन इसी रास्ते से होता है. ऐसे में किसी भी प्रकार का सैन्य टकराव, जहाजरानी में बाधा या सुरक्षा जोखिम अंतरराष्ट्रीय बाजार में ऊर्जा की उपलब्धता और कीमतों पर तत्काल असर डालता है. पहले भी इस क्षेत्र में तनाव के दौरान तेल की कीमतों में तेज उतार-चढ़ाव देखने को मिला है और निवेशकों की चिंता बढ़ी है.

यदि समुद्री परिवहन बाधित होता है, तो उसका असर केवल ऊर्जा क्षेत्र तक सीमित नहीं रहेगा. वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला पहले ही महामारी और विभिन्न भू-राजनीतिक संकटों के कारण दबाव झेल चुकी है. ऐसे में जहाजों के मार्ग बदलने, बीमा लागत बढ़ने और माल ढुलाई महंगी होने से इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोबाइल, उर्वरक और अन्य औद्योगिक क्षेत्रों पर भी असर पड़ सकता है. महंगाई बढ़ने का जोखिम भी स्वाभाविक रूप से बढ़ जाएगा.

भारत जैसे देशों के लिए यह स्थिति विशेष चिंता का विषय है. भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं का बड़ा हिस्सा आयात करता है और खाड़ी क्षेत्र उसके प्रमुख ऊर्जा स्रोतों में शामिल है. यदि आपूर्ति बाधित होती है या अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमतें तेजी से बढ़ती हैं, तो उसका असर घरेलू ईंधन कीमतों, परिवहन लागत, उद्योग और आम उपभोक्ताओं पर पड़ सकता है. इसलिए भारत के लिए ऊर्जा स्रोतों में विविधता, रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार और सक्रिय कूटनीतिक प्रयास पहले से अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं. हालांकि, संघर्ष के दौरान सामने आने वाले अनेक दावों और प्रतिदावों को भी सावधानी से देखने की आवश्यकता है. युद्ध की परिस्थितियों में दोनों पक्ष अपनी-अपनी रणनीतिक और मनोवैज्ञानिक बढ़त के लिए सूचनाएं जारी करते हैं. ऐसे में किसी भी दावे को अंतिम सत्य मानने से पहले विश्वसनीय और स्वतंत्र स्रोतों से उसकी पुष्टि आवश्यक है. यही जिम्मेदार पत्रकारिता और विवेकपूर्ण नीति-निर्माण की बुनियाद भी है.

इतिहास बताता है कि सैन्य संघर्ष अंततः वार्ता की मेज पर ही समाप्त होते हैं. होर्मुज जैसे संवेदनशील क्षेत्र में स्थायी समाधान केवल कूटनीति, संवाद और अंतरराष्ट्रीय सहयोग से ही संभव है. वैश्विक शक्तियों और संयुक्त राष्ट्र की जिम्मेदारी है कि वे तनाव कम करने के लिए प्रभावी पहल करें. क्योंकि यदि यह टकराव लंबा खिंचता है, तो इसकी कीमत केवल युद्धरत पक्ष ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया को आर्थिक अस्थिरता, महंगाई और ऊर्जा संकट के रूप में चुकानी पड़ सकती है.

आदिवासियों को मिले वनोपज का उचित दाम

लक्ष्मण सिंह
पूर्व सांसद

> भविष्य में नक्सलवाद नहीं बढ़े इसके लिए आवश्यक है कि वनोपज का उचित दाम आदिवासियों और वनवासियों को अवश्य मिलना चाहिए और भविष्य में वोटिंग भी इन्हीं मुद्दों पर होगी, धर्म और जाति पर वोट देते देते लोग ऊब गए हैं. राजनीतिक दलों को अपनी नीतियों का निर्धारण पुनः करना चाहिए. सबसे हास्यास्पद बात तो यह है कि जो लोग इनकी आवाज उठाते हैं उन्हें माओवादियों से सहानुभूति रखने वाला माना जाता है. बड़े-बड़े कारखानों से हम इस वर्ग के लोगों को रोजगार नहीं दे सकते क्योंकि ये शिक्षित नहीं है और अब तो शासन शासकीय स्कूल सारे देश में धीरे-धीरे बंद करता जा रहा है और सबसे ज्यादा सरकारी स्कूलों के बंद होने की संख्या, लगभग 50 प्रतिशत मध्यप्रदेश में है जिसे अभी तक कांग्रेस ने प्रभावी ढंग से नहीं उठाया है, संभवतः वो भी निजी शिक्षा के पक्ष में है. सहकारी और कृषक बैंकों को पुनः प्रारंभ किया जाए जिससे किसान और वनवासी सूदखोरों से दूर रहें और सूदखोरों के लिए सख्त सजा का प्रावधान भी होना चाहिए.

यह लेख विशेषकर उन लोगों के लिए लिखा गया है जिन्होंने अपने राजनीतिक उद्देश्य को पूरा करने के लिए देशवासियों को समाज और जाति में बांट कर चुनाव में कई वर्षों से, वोट लेने का एक माध्यम बना लिया है और आज भी उनकी रणनीति जो केवल विकास पर आधारित होना चाहिए ऐसा नहीं होकर केवल और केवल जातिवाद और धर्म पर आधारित है. दुर्भाग्यवश, वो सफल भी हो रहे हैं क्योंकि कांग्रेस जिसने देश को आजादी दिलाई है वो भी दुर्भाग्यवश इसी दिशा में राजनीति कर रही है और भाजपा ने भी अपने कई सिद्धांतों से समझौता कर लिया है सबसे आश्चर्य तो तब हुआ जब राष्ट्र की जनगणना जाति के आधार पर कराए जाने की मांग की गई जो पूर्णतः राजनीतिक थी. आप कह सकते हैं कि मैंने यह विषय क्यों नहीं उठाया जब मैं सांसद या विधायक था? वो इसलिए कि, दुर्भाग्यवश, पार्टी लाइन के विरुद्ध आवाज उठाना अनुशासनहीनता माना जाता है जबकि आजादी प्राप्त करने का उद्देश्य भी बोलने की आजादी था और संविधान भी हमें ये अधिकार देता है. और चूंकि मैंने कई बार राष्ट्रहित, जनहित के मुद्दे जो पार्टी नहीं उठाती थी, जो भी कारण रहे हों, उठाने का प्रयास किया मुझे पार्टी ने सुनने के बजाय सजा दी और अनुशासन तोड़ने का आरोप लगा कर पार्टी से बाहर कर दिया.

हम विषय पर पुनः लौटते हैं. हमारे देश में एक बहुत बड़ी आबादी जिनकी संख्या करोड़ों में है, या तो वन में निवास करती है या वन के निकट निवास करती है. ये लोग वर्षों से जब जाति की राजनीति नहीं होती थी तो एक दूसरे के लिए सहारा बन कर रहते थो आज इस दोषपूर्ण, राजनीति जो जाति पर आधारित है, ने उनमें भी फूट डाल दी है. यह भावना देश की एकता और संप्रभुता के लिए सबसे बड़ा खतरा है. वन क्षेत्र में कृषि कम होती है क्योंकि जंगली जानवर फसल खा जाते हैं और उनके रहने के लिए भी अभ्यारण्य नहीं बन पा रहे हैं. यही मुख्य कारण है कि आज करोड़ों की संख्या किसानों की कर्ज में डूबी हुई है और जो बैंक इन्हें कर्ज देते थे वो बंद कर दिए गए हैं और ये सारे लोग सूदखोरों के चंगुल में फंस चुके हैं, इनकी जमीन अधिकतर उनके यहां गिरवी रखी है. एक तरफ हमारे देश में मुट्ठी भर उद्योगपति विश्व के अमीरों में गिने जा रहे हैं और दूसरी तरफ हमारे किसान मजदूर बनते जा रहे हैं क्योंकि आज कृषि घाटे का सौदा बन चुका है, विशेषकर उन लोगों के लिए जो वन में या वन के निकट रहते हैं और जिनसे मिलने का या चर्चा करने का समय हमारे नेताओं के पास नहीं है क्योंकि उनकी गाड़ियों का काफिला इतना बड़ा होता है कि ये लोग उनसे मिल नहीं पाते हैं.

केंद्र शासन की एक संस्था है ट्राइफेड जो वनवासियों के द्वारा बनाए गए उत्पादों को खरीदती है परन्तु उन उत्पादों कि खरीदी की दर कई वर्षों से नहीं बढ़ी है इसलिए उन्हें विवश होकर स्थानीय व्यापारियों को बेचना पड़ता है जिसे व्यापारी उनसे लेकर सस्ते में सौ गुना दाम पर बेचता है. नेता और शासन मूक दर्शक बने रहते हैं जो ये मुद्दा उठाते हैं उन नेताओं की आवाज पार्टी या शासन में नहीं सुनी जाती. उदाहरण के रूप में हम अगर एक ऐसे वनोपज लाक जिसे इंडियन जूजूबा भी कहा जाता है, की चर्चा करें तो यह अकेला देश के ग्यारह राज्यों में , झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, मेघालय, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल के वन क्षेत्र से एकत्रित किया जाता है, जिसे ट्राइफेड जो एक शासकीय संस्था है, 243 रुपया प्रति किलो के हिसाब से भुगतान कर इन वन वासियों से क्रय करता है जबकि इसका बाजार मूल्य लगभग 2000 रुपया प्रति किलो है. व्यापारी सस्ते में इन भोले भाले वनवासियों से खरीद कर करोड़ों का मुनाफा कमाते हैं. क्या यह न्यायपूर्ण है विशेषकर उनके साथ जो सरकार बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं? ऐसा करने से यह संदेश भी स्पष्ट जाता है कि शासन व्यापारियों की हितैषी है वन वासियों की नहीं. इसका उत्पादन जो 2020 में 21590 टन था और अब घट कर 17000 टन हो गया है, इसे बढ़ाने का भी प्रयास होना चाहिए क्योंकि अंतरराष्ट्रीय बाजार में अन्य देश अपना व्यापार बढ़ा रहे हैं और हमारा घट रहा है जबकि मांग इसकी बढ़ती जा रही है.

परिसीमन पर राकां (शरद) का कैसा रुख

यद्यपि सांसद सुप्रिया सुले ने कहा है कि उनकी पार्टी राकां (शरद पवार) बीजेपी या एनडीए के साथ नहीं जाएगी लेकिन उनके यह कहने से संभ्रम उत्पन्न हो गया है कि परिसीमन प्रस्ताव आने पर देखेंगे कि क्या करना है. इस बात से यह लगता है कि कहीं अपने चुनाव क्षेत्र के विकास के लिए और सांसदों-विधायकों के दबाव में सुप्रिया एनडीए में न चली जाए. एनसीपी में फूट डालकर बीजेपी को सहयोग देते समय अजीत पवार ने भी ऐसा ही कारण बताया था. जिस तरह अजीत ने बीजेपी का साथ देने के बावजूद कहा था कि उन्होंने महात्मा फुले, शाहू महाराज व डॉ. आंबेडकर के विचारों को छोड़ा नहीं है, वैसी ही बात भविष्य में शरद पवार गुट कर सकता है. एनसीपी की राजनीति इसी तरह चलती है. 1999 में विदेशी मूल के मुद्दे पर कांग्रेस छोड़कर शरद पवार ने अपनी अलग पार्टी बनाई. चुनाव में कांग्रेस को चुनौती दी लेकिन बाद में कांग्रेस से हाथ मिलाकर 15 वर्षों सत्ता भोगी व केंद्र की मनमोहन सरकार में मंत्री रहे. महाराष्ट्र में भी कांग्रेस का मुख्यमंत्री रहने के बावजूद सत्ता पर पवार की पार्टी की पकड़ थी. 2014 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस एनसीपी, बीजेपी, शिवसेना ने अलग-अलग चुनाव लड़ा. नतीजे आने के बाद बीजेपी को सरकार बनाने में 20 सदस्यों की कमी पड़ रही थी तो एनसीपी ने बाहर से समर्थन देने की घोषणा कर दी. तब भी एनसीपी नेता कहते थे कि उन्होंने अपने प्रगतिशील विचार छोड़े नहीं हैं. 2019 के विधानसभा चुनाव के बाद पार्टी ने महाविकास आघाडी बनाई तथा कांग्रेस व शिवसेना के साथ सरकार बनाने पर चर्चा की. इसी दौरान एनसीपी की बीजेपी से भी चर्चा जारी थी. तब देवेंद्र फडणवीस और अजीत पवार की सुबह की शपथ हुई लेकिन सुप्रीम कोर्ट के निर्णय की वजह से यह प्रयोग ढाई दिन में ही विफल हो गया था. ऐसा नहीं होता तो राज्य में एनसीपी व बीजेपी की मिली-जुली सरकार बन गई होती.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

विंध्य की डायरी

कांग्रेस का एकता पाठ कुछ मैदानी हकीकत कुछ और....

डॉ. रवि तिवारी

कांग्रेस के संगठन सृजन अभियान के मंथन से जिला, शहर अध्यक्ष सहित मंडलम् अध्यक्ष निकले. एकता, अनुशासन के पाठ्यक्रम में सभी को एकता, अनुशासन का पाठ पूरी तन्मयता के साथ पढ़ाया गया. मंचों पर भाषण के दौरान ऐसा लगता था कि नई कांग्रेस का उदय हो रहा है. नये रूप में पार्टी मैदान में दिखेगी और विंध्य जो कि भाजपा का गढ़ बन चुका है उसे उखाड़ फेंकने का काम वर्षों बाद होगा. तमाम एक्शन प्लान संगठनात्मक बैठक में तैयार तो हुआ लेकिन मैदानी हकीकत कुछ और है. धरातल पर अमली जामा पहनाना बाकी है. पार्टी छत्रपों की राजनीति से उभर नहीं पा रही है. रीवा में संगठन लड़खड़ा रहा है हर कोई बगावत के लिये तैयार है. तालमेल एवं समन्वय की कमी के चलते अपनी ढपली अपना राग नेता अलाप रहे हैं. संगठन के जिम्मेदार अध्यक्ष अनुशासन का चाबुक नहीं चला रहे हैं यही वजह है कि हर कोई अनुशासन की सीमा रेखा को लांघ कर सोशल मीडिया सहित अन्य प्लेटफार्मों पर कुछ भी लिख बोल रहे हैं. रीवा जिलाध्यक्ष इंजी. राजेन्द्र शर्मा संगठन में तालमेल समन्वय नहीं बना पा रहे हैं. जब कोई कार्यकर्ता अपनी पीड़ा या शिकायत रखता है तो वह मौन साधना में चले जाते हैं. हालांकि शनिवार को विस्तारिक बैठक में अध्यक्ष का सख्त रूप दिखाई दिया. जिसमें उन्होंने सख्त लहजे में चेतावनी दे डाली कि अनुशासनहीनता करने वालों को बख्शा नहीं जाएगा. इसके साथ ही जो पदाधिकारी काम नहीं करेंगे, बैठक में नहीं आएंगे वह पद छोड़ दें ताकि कर्मठ, निष्ठावान कार्यकर्ता को मौका दिया जा सके. अब देखना यह है कि इस पर अध्यक्ष कितना खरा उतरते हैं.

साइकिल अभियान की निकली हवा- रीवा संभाग में पर्यावरण संरक्षण, तेल की बचत और स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिये तत्कालीन कमिश्नर बीएस जामोद ने एक साल पूर्व एक अनूठी पहल शुरू की थी. पूरे संभाग में यह पहल स्वैच्छिक रूप से लागू की गई. जामोद साहब के जाते ही साइकिल अभियान की हवा निकल गई. हालांकि जब वह थे तो हर मंगलवार को साइकिल से कार्यालय पहुंचते थे. जबकि संभाग के अन्य अधिकारी यहां तक कि कलेक्टर भी कार से कार्यालय तक का सफर तय करते थे. उम्मीद थी कि हर मंगलवार को अधिकारी-कर्मचारी साइकिल से ही कार्यालय पहुंचेंगे पर अनूठी पहल में विराम लग चुका है. कोई भी नई पहल जब शुरू होती है तो उसका उद्देश्य सकारात्मक होता है. पूरे संभाग में सुमंगल साइकिल अभियान दम तोड़ चुका है. जामोद साहब के जाते ही अभियान भी समाप्त हो गया.

पोस्टर से गायब प्रदेश अध्यक्ष

कांग्रेस की तरह भाजपा में भी गुटबाजी के साथ अंदर ही अंदर नेता एक दूसरे की टांग खींचने में लगे रहते है. व्यक्तिवादी राजनीति धीरे-धीरे सक्रिय हो रही है. विंध्य के दौरे पर भाजपा के पिछड़ा वर्ग मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष पवन पाटीदार पहुंचे. जहा उनके स्वागत में पोस्टर-बैनर लगाये गये. मजे की बात तो यह है कि पोस्टर से भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल की फोटो ही गायब थी. पोस्टर में पूर्व विधायक तक की फोटो रही, लेकिन प्रदेश अध्यक्ष को गायब कर दिया गया. अब सवाल यह उठता है कि ऐसा क्यों हुआ? कहीं न कहीं गुटबाजी का असर कहा जा सकता है. क्या यह माना जाय कि पिछड़ा वर्ग मोर्चा के जिलाध्यक्ष राजेन्द्र यादव के जानकारी में यह सब हुआ है. प्रदेश अध्यक्ष का फोटो पोस्टर से गायब करना कोई मामूली बात नही है यह गुटबाजी की राजनीति की ओर एक इशारा है. रीवा में भाजपा अंदर ही अंदर तीन खेमे में बट चुकी है, जिसका संकेत भी सामने आने लगा है. आखिर प्रदेश अध्यक्ष का फोटो हटा कर नए नवेले अध्यक्ष क्या साबित करना चाहते है या स्थानीय छत्रपों को खुश करना चाहते है. अगर गलती हुई भी तो आनन-फानन ऐसे पोस्टर-बैनर को हटाना चाहिये था जो कि नही हटाए गये.

निशानेबाज

सरकार का क्यों नहीं अटेंशन, वांगचुक का कब तक अनशन

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, दिल्ली हाईकोर्ट को चिंता है कि अनशन कर रहे सोनम वांगचुक को मरना नहीं चाहिए. उनकी जान हर कीमत पर बचाई जाए. ऐसी ही फिक्र प्रधानमंत्री मोदी को क्यों नहीं है? वह झटपट शिक्षामंत्री धर्मेंद्र प्रधान से इस्तीफा ले लें तो वांगचुक अनशन समाप्त कर देंगे.'

हमने कहा, 'मोदी सरकार झुकना नहीं चाहती. नीट परीक्षा घोटाले की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए धर्मेंद्र प्रधान को खुद ही इस्तीफा दे देना चाहिए था. अब मोदी उनकी ढाल बने हुए हैं. चाहें तो जल्दी से मंत्रिमंडल का फेरबदल कर प्रधान को खिसका दें या उनका विभाग बदल दें. कोई रास्ता तो निकालना होगा.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, अनशन करके महात्मा गांधी अंग्रेज सरकार को झुका लिया करते थे. जब डा. आंबेडकर ने दलितों के लिए अलग चुनाव क्षेत्र बनाने की मांग की तब भी बापू ने इस मांग के खिलाफ यह कहकर अनशन किया था कि दलित भी हिंदू समाज का अंग हैं. अलग चुनाव क्षेत्र का मतलब हिंदुओं को बांटना होगा. बापू की जान बचाने के लिए डा. आंबेडकर ने अपनी मांग वापस ले ली थी. पंजाबी सूबे की मांग को लेकर मास्टर 2 तारासिंह ने बहुत लंबा अनशन

किया था. आखिर नेहरू सरकार ने उनकी मांग मानकर पंजाब राज्य का गठन किया. पोट्टि श्रीरामुलू ने अनशन कर के अपनी जान दे दी. उनके इस बलिदान की वजह से आंध्रप्रदेश बना था. अनशन में बहुत शक्ति है.'

हमने कहा, 'यूरोप-अमेरिका के फाइव कोर्स मील या 5 बार भोजन करनेवाले लोग नहीं जानते कि अनशन किस चिड़िया का नाम है. वह दिनभर कुछ न कुछ खाते हैं, भूखे नहीं रहते. अनशन सिर्फ भारतीय कर सकते हैं. कितने ही लोग सोमवार, मंगलवार, गुरुवार, शनिवार मे से किसी एक दिन उपवास करते हैं. कुछ एकादशी या पूर्णिमा को व्रत करते हैं. हिंदू महिलाएं ज्यादा उपवास करती हैं. मुस्लिम रमजान महीने में रोजे रखते हैं और सूर्योदय से सूर्यास्त तक कुछ भी नहीं खाते-पीते.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, हर इंसान अनशन नहीं कर सकता. इसके लिए प्रबल इच्छाशक्ति या विलपॉवर चाहिए. अनशन करने की प्रैक्टिस भी होनी चाहिए. जैन समुदाय में जब कोई बुजुर्ग प्राण त्यागना चाहता है तो संथारा ले लेता है. भोजन व पानी की मात्रा कम करता चला जाता है और फिर शिथिल व मरणासन्न रहते हुए इस संसार को छोड़ जाता है.' हमने कहा, 'प्रधानमंत्री मोदी भी नवरात्रि में उपवास करते हैं लेकिन उनकी एनर्जी बनी रहती है. राममंदिर की प्राणप्रतिष्ठा के पूर्व उन्होंने कई दिनों तक उपवास किया था. स्वामी गविंद देव गिरी ने चम्मच से चरणामृत पिलाकर उनका उपवास समाप्त करवाया था.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12323 - डॉ. सागर खादीवाला

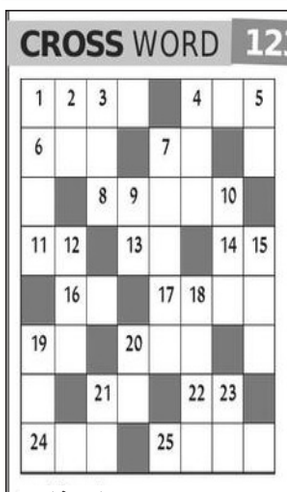

बाएं से दाएं

1. गौतम बुद्ध की माता का नाम, दुर्गा 4. क्षेत्र (उर्दू) 6. दशा, स्थिति 7. उम्मीद 8. विष्णु का वराह अवतार (सं.) 11. अयोध्या के सूर्यवंशी प्रसिद्ध राजा, जो दिलीप के पुत्र और श्रीरामचंद्रजी के परदादा रहे. 13. फायदा, मुनाफा 14. आघात, लक्ष्य, बहुत 16. उछल-उछलकर जाती हुई वस्तु का बीच-बीच में टिकान, उछाल, एक प्रकार का पंजाबी गाना 17. गहरा होने का भाव या माप 19. पहनावा, वस्त्र 20, व्याकुल, आर्त 21. चमड़ा, त्वचा 22. खटाई के योग से जमाया हुआ दूध 24. मस्तक, माया 25. आम के वृक्षों का बाग

ऊपर से नीचे

1. बहुत बड़ा वीर, जैनियों के चौदहवें तीर्थंकर 2. समाचार, वृत्तांत, विवरण (उर्दू) 3. मृतक का शोक (उर्दू) 4. संकेत, गुप्त प्रेरणा 5. औषधियों का उबला हुआ रस 7. आदर, सत्कार (सं.) 9. शराब, मदिरा (सं.) 10. 'हम' का संबंधकारक रूप 12. टांग के बीच का जोड़, सांस रुकना, घिसकर चिकना होना 15. धनी, अमीर, बड़ा आदमी (उर्दू) 18. सदा, सदैव, हमेशा (उर्दू) 19. मेघ 20. समय, मृत्यु 21. चारपाई 23. एक प्रसिद्ध बहुमूल्य रत्न जो चमक और कठोरता के लिए प्रसिद्ध है

Solution 12322

म	हा	का	ल		म	ह	ज
र	ट	ना		पा		या	मी
ह			ज्ञा	प	न		न
म	हा	ज	न		र	ब	
प	र	म		क	म	सि	न
ड़ी		घ	प	ला		या	र
	घ	ट		का	न		मा
ची	र		च	र	म	रा	ना

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में विचार विमर्श होगा, व्यक्तिगत संबंधों में कार्य की अधिकता रहेगी, वर्ष के मध्य में शारीरिक कष्ट और मानसिक चिन्ता रहेगी. स्वजनों से मतभेद होगा, शारीरिक परेशानियों में वृद्धि होगी. वर्ष के अन्त में मित्रों के सहयोग से सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. निजी दायित्वों का निर्वहन होगा. मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को आर्थिक लाभ होगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को नई परेशानियों में विचार विमर्श होगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को संबंध में कार्य पूर्ण होगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को स्वजनोंसे मतभेद होगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को मानसिक कष्ट होगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों के लिये परिश्रम करना होगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को निजी कार्यों में सतर्कता बांछनीय.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य, सुन्दर, सुशील, होगा. शिक्षा उत्तम रहेगी. नौकरी में अच्छी सफलता प्राप्त करेगा. इनकी विचारधारा स्वतंत्र रहेगी, माता पिता को सुखी रखेगा.

मेष- किसी भूले बिसरे साथी से मुलाकात होगी. कामकाज में शिथिलता रहेगी. अतिथि आगमन हो सकता है. खर्च पर नियंत्रण रखें हितकर रहेगा. मन खुश रहेगा.

वृषभ- विरोधियों से कड़े मुकाबले की आशंका है, सत्संग का लाभ होगा. नवीन योजनाओं का विस्तार होगा. प्रगतिवर्धक समाचार मिलेंगे. खर्च अधिक होगा.

मिथुन- छोटी मोटी जरूरतों पर धन व्यय होगा. मनोरंजक यात्रा का योग है. उत्तरदायित्वों की पूर्ति होगी. स्थान परिवर्तन का योग है.आलस्य का अनुभव होगा.

कर्क- व्यापार के क्षेत्र में नये अवसर प्राप्त होंगे. कामकाज में मन लगेगा. संतानपक्ष से सहयोग मिलेगा. प्रियजनों से भावनात्मक पीड़ा होगी.

सिंह- मेहनत करने से ही सफलता के आसार हैं. भाग्य आपका साथ देगा. पारिवारिक सुख की प्राप्ति होगी. मानसिक सुख संतोष रहेगा.

कन्या- स्वास्थ्य का विशेष तौर पर ध्यान रखें. अस्वस्थ्यता एवं आलस्य का अनुभव होगा. योजनाबद्ध तरीके से कार्य करें. सफलता अवश्य प्राप्त होगी.

तुला- कानूनी मामले के कार्यों में सावधानी से निर्णय करें, शत्रु वर्ग पराजित होगा. प्रियजनों के कारण भावनात्मक कष्ट होगा. स्वास्थ्य सामान्य रहेगा.

वृश्चिक- कार्यक्षेत्र में भाग्य साथ देगा. किसी आवश्यक कार्य हेतु यात्रा होगी. शिक्षा से संबंधित कामकाज बनेंगे. संतान के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी.

धनु- धार्मिक कार्य पूजा पाठ में मन लगेगा, सामाजिक कार्य या किसी उत्सव में भाग लेंगे, वाहन का प्रयोग करते समय सावधानी रखें.

मकर- व्यापार व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता के आसार हैं, पुमकर समस्या हल होने का योग है. पुरूषार्थ के कार्यों में अच्छी सफलता मिलेगी. मित्र मिलन होगा.

कुम्भ- दोस्तों के माध्यम से पुराने विवादों का हल होगा. धार्मिक कार्यों में रूचि रहेगी. आर्थिक समस्या का समाधान होगा. कुटुम्बियों का सुख रहेगा.

मीन- अप्रत्याशित घटनायें होंगी. काम में मन नहीं लगेगा. दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता रहेगी. दिनचर्या अनुकूल रहेगी. चिन्ता दूर होगी. खानपान पर संयम रखें.

उदयकालीन ग्रह चाल

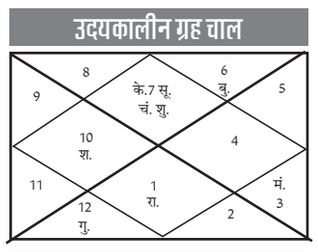

पंचांग

रा.मि. 29 संवत् 2083 आषाढ शुक्ल षष्ठी चन्द्रवासरे प्रातः 6/56, हस्त नक्षत्रे रात 11/7, शिव योगे रात 11/13, तैतिल करणे सू.उ. 5/19, सू.अ. 6/41, चन्द्रचार कन्या, शु.रा. 6,8,9,12,1,4 अ.रा. 7,10,11, 2,3,5 शुभांक- 8,0,5.

व्यापार भविष्य

आषाढ शुक्ल षष्ठी को हस्त नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, पीतल, लोहा, शेयर खली, बिनौला, जीरा, धनियां, लालमिर्च, हल्दी, मैथी, के भाव में तेजी होगी. गुड़ खांड़ में नरमी रहेगी. भाग्यांक 3715 है.

SUDOKU 7455

7	4	6		1		8		2
	5		8		7			
9				6				
	6		7	9		5		3
5				4				1
3		1		8	2		7	
				5				6
			4		3		9	
4		3		2		1	5	7

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7454

8	7	9	4	2	5	6	1	3
5	6	3	8	1	7	4	2	9
4	1	2	6	9	3	5	8	7
1	9	8	3	7	4	2	6	5
7	3	4	2	5	6	8	9	1
2	5	6	1	8	9	7	3	4
9	8	5	7	3	2	1	4	6
6	2	7	9	4	1	3	5	8
3	4	1	5	6	8	9	7	2